Subject :- History (Sub)
Degree Part I (Sub)
Lecture No - 25
Unit - 2

Dr. H. N. Mahto
Deptt of History

Date - 21. 4. 2020

Ques:- चन्द्रगुप्त मौर्य की जीवनी एवं कार्यों का वर्णन कीजिए।

Ans:- मौर्यवंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था। यूनानी आक्रमण से उत्पन्न संकट से ग्रस्त और मगध के अत्याचारी शासकों से त्रस्त जनता को मुक्ति दिलाने के लिए उसने ब्राह्मण चाणक्य की सहायता से अपना राज्य स्थापित किया।

चन्द्रगुप्त का प्रारंभिक जीवन :- जिस प्रकार मौर्यों की जाति के संबंध में अनेक मत प्रचलित है, उसी प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रारंभिक जीवन भी किवदंतियों पर आधृत है। बौद्धग्रन्थों के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के पूर्वज पिप्पलिवन के शासक थे। जब यह राज्य मगध साम्राज्यवाद का शिकार बन गया, तब मोरिय-कुल के व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करने लगे। चन्द्रगुप्त का बाल्यजीवन भी जंगलों में बीता। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात (पिता का नाम ज्ञात नहीं है) अपनी माता के साथ वह मगध की राजधानी पाटलिपुत्र चला आया। चन्द्रगुप्त बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि का था। एक दिन 'राजकीलम' खेल के दौरान चाणक्य की नजर उसपर पड़ी। चाणक्य सुविख्यात शिक्षा केन्द्र तक्षशिला का आचार्य था। वह यूनानी आक्रमणकारियों से भारत को स्वतंत्र करने का संकल्प लेकर मगध के शासक धननंद के पास पाटलिपुत्र आया था, परंतु नंद राजा ने उसे अपमानित कर निकाल दिया।

कहा जाता है कि अपने अपमान से क्षुब्ध होकर उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह नंदों का नाश करेगा। पाटलिपुत्र से वापस लौटते समय उसकी नजर चंद्रगुप्त

पर पड़ी। उसकी योग्यता से प्रभावित होकर वह उसे अपने साथ तक्षशिला ले गया एवं उसे समुचित शिक्षा दिलाकर उसी के द्वारा नंदों के विनाश की योजना बनाई।

चन्द्रगुप्त की विजय योजना :- चन्द्रगुप्त के सामने दो स्पष्ट लक्ष्य थे - मगध से नंदों के अत्याचारी शासन को समाप्त करना तथा यूनानी आक्रमणकारियों से भारत को मुक्त कराना। सबसे पहले उसने नंदशासक धननंद को पराजित करने की योजना बनाई। इस हेतु उसने सिकंदर से भेंट कर उससे सहायता मांगी। लेकिन सिकंदर ने चन्द्रगुप्त की उद्दंडता से क्रुद्ध होकर उसे मार डालने की आज्ञा दी। फलतः चन्द्रगुप्त को भागकर अपनी जान बचानी पड़ी।

पंजाब की विजय :- प्रारंभिक असफलता से चंद्रगुप्त निराश नहीं हुआ। उसने पंजाब के लड़ाकू कबीलों की एक सेना संगठित की तथा हिमालय के पर्वतीय राजा पर्वतक से मैत्री भी स्थापित की। चन्द्रगुप्त और चाणक्य यूनानी सत्ता के विरुद्ध असंतोष भड़काते रहे। उन्हें अपने प्रयास में सफलता भी मिली और पंजाब में मुक्ति संघर्ष आरंभ हो गया। सिकन्दर की वापसी और उसकी मृत्यु (323 ई० पू०) के बाद तो स्थिति और भी अनियंत्रित हो गई। यूनानी सत्ता के कमजोर पड़ते ही चंद्रगुप्त ने सिंध और पंजाब पर अधिकार कर लिया एवं राजा बन बैठा।

मगध पर अधिकार :- पंजाब से वह मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पहुंचा। मगध की जनता नंदशासकों के अत्याचारों से ऊब चुकी थी। अतः चन्द्रगुप्त का स्वागत एक मुक्तिदाता के रूप में किया गया। मगध की जनता के सहयोग से वह अंतिम नंदशासक, धननंद को पराजित करने में सफल हुआ। धननंद को पराजित करने के लिए मुद्राराक्षस के अनुसार, चाणक्य को षडयंत्र करना

पड़ा। धननंद और चन्द्रगुप्त के बीच भीषण संघर्ष हुआ। मिलिन्दपण्हो के अनुसार युद्ध में 100 कोटि सैनिक, 10,000 हाथी 1 लाख घोड़े और 5000 रथ मारे गये और नष्ट हुए। धननंद का गड़ा हुआ खजाना चन्द्रगुप्त को मिला। धननंद युद्ध में मारा गया। अब उसकी जगह 321 ई० पूर्व में चन्द्रगुप्त मगध का सम्राट बना।

जम्बूद्वीप की विजय:- चन्द्रगुप्त सिर्फ पंजाब और मगध की विजय से ही संतुष्ट नहीं हुआ, बल्कि उसने भारत के अन्य भागों पर भी विजय प्राप्त की। प्लूटार्क के अनुसार, चंद्रगुप्त ने 6 लाख सेना के साथ सम्पूर्ण भारत को रौंद डाला। जिसनी मगध साम्राज्य की सीमा सिंधु नदी तक बताता है। बौद्ध ग्रंथ महावंश से भी ज्ञात होता है कि कौटिल्य ने चन्द्रगुप्त को जम्बूद्वीप का सम्राट बनाया। इस तरह चन्द्रगुप्त ने विंध्य पर्वत के दक्षिणी भाग के एक बड़े हिस्से पर अपना अधिकार कर लिया एवं मौर्य साम्राज्य की सीमा विस्तृत की।

सेल्यूकस से संघर्ष:- चन्द्रगुप्त का एक अन्य महान सैनिक अभियान सेल्यूकस के विरुद्ध हुआ। जिस समय चन्द्रगुप्त अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहा था, उस समय सिकंदर के सेनानी आपसी प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष में व्यस्त थे। इस संघर्ष में अंततः सेल्यूकस को विजय मिली। बेबीलोन और बैक्ट्रिया को रौंदता हुआ वह भारत की तरफ बढ़ा। 305-304 ई० पूर्व में काबुल के मार्ग से होता हुआ वह सिंधु नदी की तरफ बढ़ा। उसका उद्देश्य सिकंदर द्वारा विजित भू-भाग पर पुनः अधिकार करना था; परन्तु इस समय तक भारत की परिस्थिति बदल चुकी थी। सिकंदर की तरह उसे छोटे-छोटे असंगठित राज्यों से मुकाबला नहीं करना था, बल्कि चन्द्रगुप्त जैसे शक्तिशाली शासक की सेना का सामना

Scanned with CamScanner

करता था। इस युद्ध का पूर्ण विवरण यूनानी और रोमन साहित्य में नहीं मिलता। सिर्फ एप्पियानस इस युद्ध के विषय में लिखता है। उसके अनुसार "सेल्यूकस ने सिंधु नदी पार की और भारत के सम्राट चन्द्रगुप्त से युद्ध छेड़ा। अंत में उनमें संधि हो गई और वैवाहिक संबंध स्थापित हो गया।" सेल्यूकस ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया और चन्द्रगुप्त ने 500 हाथी उपहारस्वरूप सेल्यूकस को भेजे। सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगास्थनीज को पाटलिपुत्र भेजा जिसने इंडिका में चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन, पाटलिपुत्र, इसकी प्रशासनिक व्यवस्था और अन्य विषयों पर लिखा।

साम्राज्य विस्तार :- अपने विजय अभियानों द्वारा चंद्रगुप्त ने नंदों से भी अधिक विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की। लगभग समस्त भारत को उसने एक राजनीतिक सूत्र में बांध दिया। सेल्यूकस को पराजित कर उसने मौर्य साम्राज्य का विस्तार मध्य एशिया तक किया। इस प्रकार चंद्रगुप्त का साम्राज्य पश्चिम में हिन्दूकुश पर्वत से पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक तथा उत्तर में हिमालय श्रृंखला से दक्षिण में कम से कम मैसूर तक विस्तृत था।

चन्द्रगुप्त के अन्य कार्य :- चन्द्रगुप्त मौर्य सिर्फ एक महान विजेता ही नहीं, बल्कि एक कुशल प्रशासक भी था। उसके शासन का उद्देश्य लोकहितकारी राज्य की स्थापना करना था। उसने चाणक्य की सहायता से एक सुदृढ़ प्रशासन की भी व्यवस्था की। अर्थशास्त्र और इंडिका से इसकी जानकारी मिलती है। राजा राज्य के सभी विभागों पर गुप्तचरों की सहायता से नियंत्रण करता था। चन्द्रगुप्त ने एक विशाल और स्थायी सेना भी संगठित की। चन्द्रगुप्त के समय

Scanned with CamScanner

में पाटलिपुत्र नगर का महत्व, साम्राज्य की राजधानी होने के कारण, अत्यधिक बढ़ गया।

चन्द्रगुप्त अपने पराक्रम, परिश्रम और निपुणता से भारत का प्रथम सम्राट एवं प्राचीन भारत का एक युगपुरुष बन बैठा। वह प्रथम भारतीय साम्राज्य निर्माता, मुक्तिदाता और कुशल प्रशासक के रूप में विख्यात है, उसे 'मुक्तिदाता' (Liberator) इसलिए कहा जाता है कि उसने एक तरफ तो मगध की जनता को नंदो के अत्याचारी शासन से मुक्ति दिलाई तो दूसरी तरफ पंजाब से यूनानियों के प्रभुत्व को समाप्त कर देश को विदेशी दासता से मुक्त किया। चन्द्रगुप्त एक विजेता और प्रशासक के अतिरिक्त कूटनीतिज्ञ भी था। उसने विदेशी शासकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाया। परिणामस्वरूप भारतीय-यूनानी संपर्कों की परंपरा बढ़ी। अनेक यूनानी भारत में रहने लगे। भारतीय कला और संस्कृति पर यूनानी संपर्क का गहरा प्रभाव पड़ा। इसलिए अनेक विद्वानों का मानना है कि भारत को हेलेनाइज करने में सिकन्दर से अधिक योगदान चन्द्रगुप्त का है। चन्द्रगुप्त की धर्म में भी गहरी अभिरुचि थी। वह जैन धर्म का समर्थक था। जैन अनुश्रुतियों के अनुसार अपने जीवन काल के अंतिम चरण में उसने जैन धर्म अपना लिया। मगध में पड़नेवाले द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष से दुःखी होकर वह राज्य त्यागकर आचार्य भद्रबाहु के साथ मैसूर चला गया। वहीं श्रवणबेलगोला में उसने कैवल्य प्राप्त किया।

Dr. Hem Narayan Mahto
Associate Professor
Deptt of History
R.N. College, Pandaul
9835007357

Scanned with CamScanner